प्रतिवेदन

विषय	-	संस्कृत कार्यशाला
स्थल	-	बाल भारती पब्लिक स्कूल , पीतमपुरा
दिनांक	-	17.08.2015

विषय-विशेषज्ञ - प्रो० चाँद किरण सलूजा

इस कार्यशाला के **मुख्य उद्देश्य** थे -

1. संस्कृत शिक्षण को विभिन्न प्रयोगों द्वारा उपयोगी , रुचिकर व रचनात्मक बनाना,
2. शिक्षकों को मूल्यांकन करने , व्याकरण सिखाने तथा भाषा के पठन-पाठन के रोचक तरीकों की जानकारी देना,

प्रथम सत्र

संस्कृत शिक्षण को विभिन्न प्रयोगों द्वारा उपयोगी , रुचिकर व रचनात्मक बनाने हेतु बिंदुओं पर चर्चा की गई । भाषा को सरलतम बनाने तथा संस्कृत का व्यवहार पक्ष सुदृढ़ करने हेतु उपाय बताए ।

द्वितीय सत्र

संस्कृत का परिवेश व वातावरण बनाने पर बल दिया गया । भाषा कौशल के विविध रूपों, बिंदुओं पर चर्चा की गई । उपयोगी सत्र रहा ।

तृतीय सत्र

विद्यालय के विविध स्थलों पर संस्कृत के प्रयोग हेतु गतिविधियाँ करवाई गईं । संस्कृत पठन-पाठन हेतु , संस्कृत शिक्षण को विभिन्न प्रयोगों द्वारा सजीव व सार्थक करने हेतु विविध दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि के प्रयोग , पाठ-सज्जा के योजना निर्माण करने पर उपयोगी चर्चा की गई ।

चतुर्थ सत्र

छात्रों के लिए पुस्तकालय में संस्कृत पुस्तकों को उपलब्ध कराने का सुझाव तिया गया । छात्रों का मूल्यांकन करने के लिए विविध समस्याओं के निदान व उपचार पर चर्चा की गई ।

छात्रों के हित के लिए सुधी पाठक बनने हेतु शिक्षकों को परामर्श दिया गया ।

प्रतिभागी सदस्य - डॉ० निशि निगम
मनीषा सेठी

17.05.2014

प्रथम सत्र - विषय-विशेषज्ञ : श्रीमती कविता धर - सी०सी०ई०

सी०सी०ई० के लाभ , उसके अन्तर्गत मूल्यांकन करते समय आने वाली समस्याओं पर चर्चा करते हुए शिक्षकों की भूमिका , छात्रों का मूल्यांकन , अनेक क्रियाओं द्वारा छात्र को भावी जीवन में लाभान्वित होने पर प्रकाश डाला गया।

द्वितीय सत्र - विषय-विशेषज्ञ : डॉ० मधु पंत

शिक्षक के मुख्य उद्देश्य के रूप में सृजनशीलता को बढ़ावा देने का मार्ग सुझाया गया । शिक्षा के उद्देश्यों में भी सृजनशीलता को उच्चतम शिखर पर रखा गया । सृजनशीलता की प्रवृत्ति विकसित करने के उपाय सुझाए गए । सहभागी शिक्षकों से अनेक विषयों पर कविताएँ लिखवाईं गईं ।

तृतीय सत्र - विषय-विशेषज्ञ : डॉ० सुशील गुप्त

विविध रसपूर्ण कविताएँ सुनाकर रसास्वादन करने की प्रेरणा दी । गतिविधियों द्वारा श्रवण क्षमता विकसित करने के उपाय सुझाए गए ।

चतुर्थ सत्र - विषय-विशेषज्ञ : डॉ० माधवी कुमार

पाठ्यपुस्तकों की समस्याएँ , शिक्षा के उद्देश्य , भाषा शिक्षण के उद्देश्य बताए गए । इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए समाधान स्पष्ट किए गए । पाठ पढ़ाते समय छात्र को विविध जीवन मूल्य देने की बात उदाहरणों के आधार पर स्पष्ट की गई ।